DISCUSSION ON THE WORKING OF THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS

श्री अनिल माधव दवे (मध्य प्रदेश): माननीय उपसभापति जी, भारत के दूसरे सबसे बड़े विभाग, गृह मंत्रालय पर चर्चा की शुरूआत करने के लिए आपने मुझे जो अवसर दिया है, इसके लिए मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं?

जो गृह मंत्रालय, जिसे हम एमएचए भी कहते हैं, उसके जो प्रमुख विभाग हैं, उनके ऊपर मैं क्रमशः चर्चा करना चाहता हूं। उनके कुछ ऐसे बिन्दुओं पर मैं अपनी बात कहना चाहता हूं, जिनके संबंध में आने वाले समय में हमें विचार करने की जरूरत है। इसका जो सबसे पहला विभाग लिखा गया है, वह डिपार्टमेंट ऑफ बॉर्डर मैनेजमेंट है। मैंने यह विषय कल-परसों के पूरक प्रश्न में भी उठाया था और आज फिर मैं इसको कह रहा हूं कि बॉर्डर का मतलब कंटीले, बार्ब्ड वॉयर की फैसिंग मात्र नहीं है, इसका मतलब बार्ब्ड वॉयर से सीमा का रेखांकन नहीं है, बल्कि जो सरहद है, वहां खेत हैं, सरहद में लोग रहते हैं, सरहद के अंदर शिक्षा है, सरहद के अंदर अन्य सेवाएं हैं और सच तो यह है कि सरहद अपने आप में एक जीवित वस्तु है। जब हम सरहद का मैनेजमेंट करते हैं तो उसमे वे सब चीजें आती हैं जैसा चाइना के बॉर्डर को लगते हुए रोड्स कैसे हैं, पुलिया कैसी है, वहां रहने वाले लोगों में शिक्षा का प्रतिशत कैसा है? रोजगार कैसा है? इन सबका मैनेजमेंट ही बॉर्डर मैनेजमेंट है। हमने बॉर्डर मैनेजमेंट को केवल जूते, गन्स, मोजे और अन्य सुविधाओं तक सीमित कर दिया है। मुझे लगता है कि बॉर्डर मैनेजमेंट के अंदर इन सबको विकसित करना चाहिए।

वस्तुतः बॉर्डर सामर्थ्य का प्रतीक होता है। एक जमाना था जब भारत की बॉर्डर अफगानिस्तान के उस पार लगती थी, चलते-चलते वह अफगानिस्तान के इस तरफ आ गयी और 15 अगस्त, 1947 को वह राजस्थान तक आ गया। सरहद सामर्थ्य का प्रतीक होती है। शेर जब जवान होता है तो उसकी आवाज जंगल में जहां तक जाती है, वहां तक उसका साम्राज्य होता है, लेकिन जब वह वृद्ध हो जाता है तब उसका शरीर तक भी उसकी सीमा नहीं रहती। बॉर्डर सामर्थ्य का प्रतीक है और अगर बॉर्डर के साथ हमको न्याय करना है तो वहां केवल आईटीबीपी, बीएसएफ या इस प्रकार के जितने संस्थान हैं, उनको काम देकर ही कार्य पूरा नहीं हो सकता है।

मुझे लगता है कि देश का जो युवा है, जिसमें युवक और युवती दोनों आ गए हैं, उन सब को सीमा दिखानी चाहिए। "सीमा-दर्शन" या "सरहद को प्रणाम", ये कार्यक्रम शुरू करके हमें लोगों को और युवकों को यह बताना चाहिए कि यह वह जगह जिसे सरहद कहते हैं देखो वहां लोग कैसे काम कर रहे हैं? देखो, यहां पर लोग कितनी विपरीत परिस्थितियों में काम करते हैं। जब तक आप सीमाओं से समाज को नहीं जोड़ेंगे, जब तक सीमाओं से युवा पीढ़ी को नहीं जोड़ेंगे, जब तक युवा पीढ़ी यह नहीं समझेगी कि सीमा का मतलब क्या होता है, तब तक सीमा केवल वहां रहने वाले अर्द्धसैनिक या सैनिक बलों के हवाले ही रहेगी। मुझे लगता है कि किसी भी सामर्थ्यवान देश को अपने देश के युवकों को, अपने देश की हर पीढ़ी को सीमा के बारे में बताना चाहिए। बच्चों को केरल से अरुणाचल प्रदेश ले जाना चाहिए और उन्हें बताना चाहिए कि देखो, यह सरहद है, यहां पर लोग 24 घंटे, 365 दिन ऐसे रहते हैं। गुजरात के युवक को त्रिपुरा के घने जंगलों में ले जाना चाहिए और उसे बताना चाहिए कि देखो, सरहद इसे कहते हैं, यहां कैसा कष्ट भुगता जा रहा है। जब हम ओडिशा से किसी व्यक्ति को बाड़मेर के रेगिस्तान में ले जाते हैं तब उसे समझ में आता है कि सरहद क्या होती है, कारगिल क्या होता है। मुझे लगता है कि हमने पिछले सालों में इस विषय में चूक की है। हमने समाज को यह नहीं बताया कि सरहद

क्या होती है। हमने बॉर्डर मैनेजमेंट के अंदर इस विषय को बहुत सीमित रूप में समझा है। मुझे लगता है कि बॉर्डर मैनेजमेंट की परिभाषा को व्यापक करने की जरूरत है। सीमा से दो चीजों को जोड़कर ही सीमा मैनेजमेंट ठीक हो सकता है। सीमा पर सामर्थ्य बढ़ाइए, क्योंकि सामर्थ्यवान व्यक्ति, सामर्थ्यवान समाज से सुरक्षित सामर्थ्यवान देश की सीमा बगैर कहे सुरक्षित रहती है। इसी सीमा से समाज को जोड़िए, क्योंकि समाज से जुड़ने पर ही एमएचए का यह जो विभाग है जिसको हमने बॉर्डर मैनेजमेंट कहा है, इसका काम अपने आप में बहुत सरल हो जाएगा और मुझे लगता है कि इसके संबंध में कहीं किसी को कोई शंका हो सकती है तो एक बार सरहद जाकर जरूर देखना चाहिए और यह सरहद एक तीर्थ है। अगर चार धाम जाना तीर्थ है तो सरहद जाना भी तीर्थ है। यह बात जब हम युवकों को बताएंगे तो उससे जो प्रेरणा खड़ी होती है उसके जो साइड इफेक्ट्स हैं, वे बहुत ज्यादा है, इसके संबंध में विचार करने की जरूरत है।

डिपार्टमेंट ऑफ इंटरनल सिक्योरिटी, यह उसका दूसरा विभाग है। उपसभापति जी, वे जमाने चले गए जब घटना होती थी, बम विस्फोट होता था और वहां जाकर सारे इंटेलिजेंस डिपार्टमेंट व अन्य डिपार्टमेंट कचरे के अंदर से बम के अवशेषों को ढूंढ़ने की कोशिश करते थे। अगर यह परंपरा रही तो धमाके होते रहेंगे और आतंकवाद चलता रहेगा। अगर इंटरनल सिक्योरिटी पर हमको बात करनी है तो मैं उसका एक श्रेष्ठ उदाहरण देना चाहता हूं। जहां हर साल तो नहीं जा पाता हूं, कभी-कभी जाता हूं। इजराइल में 9/11 को लेकर के उन्हीं दिनों में काउंटर टेरेरिज्म पर एक सेमिनार होता है। इस काउंटर टेरेरिज्म के सेमिनार में सब जगह के लोग आते हैं, मलेशिया, मिडिल ईस्ट, इधर-उधर के और काउंटर टेरेरिज्म पर तीन-चार दिन तक खूब चर्चा होती है। वहां के उप प्रधानमंत्री उस सेमिनार के एक कार्यक्रम में सबको संबोधित करने के लिए आए। वे जब जाने लगे तो मैं भी बाहर निकला। मैंने देखा कि वे कार के अंदर करीब करीब अकेले थे। साथ में उनका एक असिस्टेंट था, एक सिक्योरिटी का व्यक्ति था और ड्राइवर था। वे चले गए। दूसरे दिन जब वहां के एक और अधिकारी आए जो मोसाद के एक्स चीफ थे, तो मैंने पूछा कि आपके उप प्रधानमंत्री इतने असुरक्षित वातावरण में चलते हैं, उनका कोई गार्ड नहीं था उनके आगे-पीछे कोई गाड़िया नहीं थी, उनका कोई सायरन नहीं बज रहा है तो ऐसा कैसे? तो आपके यहां सुरक्षा का यह कैसा इंतजाम है? इसके ऊपर उन्होंने जो जवाब दिया, वह काउंटर टेरेरिज्म है। उन्होंने कहा कि हमारे डिप्टी प्राइम मिनिस्टर के ऊपर कोई अटैक करता है तो हम एक्शन में नहीं आते। हम तब एक्शन में आते हैं जब उस पर अटैक करने की योजना दो हजार किलोमीटर दूर किसी कमरे में बन रही होती है। हम उस कमरे पर हमला करते हैं। यह तब संभव होता है जब इंटेलिजेंस का नेटवर्क मजबूत होता है। एमएचए का काम इंटेलिजेंस के नेटवर्क को मजबूत करने का है। अब आतंकवाद का आयाम बहुत बढ़ गया है। लीगल टेरेरिज्म डेवलप हो गया है। वहां के सेमिनार में मुझे बताया गया कि एक आतंकवादी संगठन विश्व के अंदर 700 श्रेष्ठ वकीलों को उस देश के अंदर हॉयर किए हुए हैं, अलग-अलग देशों में, कहीं उनकी संख्या पांच है तो कहीं सात। उनको पेमेंट करता है, वे छोटे-मोटे नहीं, बड़े-बड़े लोग हैं। उन बड़े-बड़ों का सीधा भुगतान करता है। उनसे कहता है कि उस देश का जो लैंड ऑफ लॉ है, वहां का जो कानून है, उस कानून के आधार पर तुम आतंकवादियों की सुरक्षा के लिए वहां के एनजीओज वहां के अलग-अलग संगठन, उनको खड़ा करो और उनको कहो कि इस कानून के अंतर्गत वह काम गलत है। वहां की जो पैरा मिलिट्री फोर्सेज है, उनका मॉरल डाउन करो। इसके लिए वे पेमेंट करते हैं। आज विश्व में फाइनेंशियल टेरेरिज्म डेवलप हो गया है, लीगल टेरेरिज्म डेवलप हो गया है, सोशल टेरेरिज्म डेवलप हो गया है। केरल के अंदर इस समय हाई

[श्री अनिल माधव दवे]

कोर्ट ने कहा कि what is this लव जिहाद? वहां की सरकार और मुख्यमंत्री से पूछा कि क्लीअर करिए कि यह क्या विषय है। यह सोशल टेरेरिज्म है। इंटरनल सिक्योरिटी के मामले में अगर हमें सशक्त देश खड़ा रखना है और एमएचए को अपना सर्वाधिक ध्यान किसी विषय पर देना चाहिए तो मुझे लगता है कि इस बात पर देना चाहिए। आज के समय में एके-47 वेपन नहीं है, सूचना ही वेपन है। सही समय पर सही सूचना बहुत बड़ा वेपन है, अन्यथा सारे वेपन बेकार है। सही समय पर सही सूचना केवल और केवल इंटेलिजेंस से आती है। आतंकवाद की तलाश बाद मे करिएगा पर स्लीपर सैल पहले ढूंढिएगा। उन्हें कौन वाहन दे रहा है? कौन खाना देता है, व्यक्ति यहां कैसे आश्रय लेता है, यहां से बाहर कैसे सफलता से निकल जाता है? देश अगर सुरक्षित रखना है, आम आदमी वापस शाम को टिफिन लेकर घर चला जाए, बच्चा स्कूल से वापस घर चला जाए, तो यह इंटेलिजेस डिपार्टमेंट का काम है कि सूचना को एकत्रित करे और इस सूचना को एकत्रित करने में मुझे यह कहते हुए बहुत दुख है कि मित्रो, हमारे देश के अंदर हम अभी सशक्त इंटेलिजेंस बहुत दूर है।

एक एजेंसी दूसरी एजेंसी पर हमला करती है, एक एजेंसी का प्रमुख दूसरी एजेंसी के प्रमुख को चिट्ठी लिख देता है कि यह क्या कर दिया, वह क्या कर दिया? यह क्या तमाशा है? आपको अगर तकलीफ है, तो अंदर बैठकर बात कीजिए। आप मीडिया के सामने यह चर्चा क्यों कर रहे हैं? लेकिन दुर्भाग्य का विषय है कि पूरे देश के वातावरण के अंदर पॉलिटिकलाइजेशन हो गया है। आज हर आदमी को चुनाव लड़ना है, हर आदमी को शासन करना है और हर आदमी को राजनीति में आना है। अब अगर ऐसा होने लगेगा तो फिर समस्या बढ़ेगी। इसलिए counter terrorism के मामले में Department of Internal Security को देखने की जरूरत है।

अब मैं डिपार्टमेंट और जे. एंड. के अफेयर्स पर बात करूंगा महोदय। शायद भारत दुनिया का एकमात्र देश है, जहां कोई व्यक्ति अपने ही देश में शरणार्थी हो जाता है। मुझे नहीं लगता कि स्विटजरलैंड में कोई होगा, मुझे नहीं लगता कि वियतनाम में कोई होगा या कोई व्यक्ति सऊदी अरब में शरणार्थी है। क्योंकि कोई एक हिस्से मे नहीं रह सकता, उसे दूसरे हिस्से में रहना पड़ेगा। इस देश के अंदर तो व्यक्ति अपने ही देश के अंदर शरणार्थी है। जम्मू और कश्मीर में रहने वाले पंडित अपने ही देश के अंदर शरणार्थी है और उन शरणार्थियों की क्या दशा है, इसे दिल्ली के बॉर्डर के अंदर ही मालूम किया जा सकता है। वर्ष 1947 में पाकिस्तान से डेढ़ लाख लोग जम्मू पहुंचे थे। उनकी आज क्या स्थिति है, यह बताने के लिए सिर्फ चार लाईन पढ़कर सुनाता हूं। "Unfortunately, those who migrated to Jammu in 1947, continued to lead wretched life even after 65 years of their stay in the State of Jammu and Kashmir numbering, approximately, 1.5 lakhs, an overwhelming majority of them Dalit. They are Indian nationals, but not the citizens of the State. They have neither the right to immovable property, to Government job, to vote in the Assembly and local body elections, to bank loan nor even the right of higher technical or professional education. Of course, they have been participating in the Lok Sabha Elections since 1967 when the jurisdiction of the Election Commission of India extended to Jammu and Kashmir. ये डेढ़ लाख लोग अभी भी रह रहे हैं, लेकिन ये भारत के नागरिक नहीं हैं। वे भारत की सेवाओं में भाग नहीं ले सकते। जब इस समस्या के बारे में मैंने संसद में प्रश्न पूछा, तो मुझे सरकार ने जवाब में कहा कि, "India is not a signatory to the 1951 U.N. Convention on the Status of Refugees and 1967 Protocol thereon. There is no national law on refugees at

pressent. The Government has ciculated a Standard Operating Procedure for dealing with foreign nationals who claimed to be refugees. अगर कोई बाहर से आकर कहे कि मैं रिफ्यूजी हूं, तो वह बात मान ली जाएगी, लेकिन भारत का कोई आदमी कहेगा कि भारत में रिफ्यूजी हूं, तो इसे लेकर हमारे यहां कोई लॉ नहीं है।

डा. भीमराव अम्बेडकर जी ने जब संविधान बनाया होगा तब उन्होंने कभी नहीं सोचा होगा कि इस देश के अंदर ऐसे कर्ता-धर्ता आएंगे, जिन के राज्य के अंदर लोग अपने ही देश में विस्थापित हो जाएंगे, अपने ही देश में शरणार्थी हो जाएंगे। इसलिए उन्होंने इस बारे में कुछ नहीं जोड़ा। उन्होंने बिल्कुल ठीक किया। अगर नहीं जोड़ा तो बिल्कुल नहीं जोड़ना था। यह कोई कैसे जोड़ सकता है। मैं अपने ही घर में कैसे विस्थापित हो सकता हूं? इसलिए जम्मू-कश्मीर के अफेयर्स के संबंध में सोचने की जरूरत है। यह बहुत गहरा और संवेदनशील विषय है। इसे लेकर पॉलिटिक्स नहीं होनी चाहिए। यह एक देश की अपने अंदर की समस्या का विषय है। हम इस पर अलग-अलग ढंग से बोलते भी हैं।

महोदय, मैं इस सदन के अंदर एक प्रश्न आने वाले वर्षों के लिए छोड़ रहा हूं। हम कहते हैं, "पाक अधिकृत कश्मीर"। भाई "पाक अधिकृत कश्मीर" कैसे हो सकता है। वह पाक अधिकृत भारत है। अगर चाइना के पास भारत की कोई भूमि है, तो वह चाइना अधिकृत उत्तरांचल या चाइना अधिकृत कश्मीर कैसे हो सकता है? यह चाइना अधिकृत भारत है। हम ये शब्द क्यों प्रयोग कर रहे हैं? इसलिए मैं सरकार से यह निवेदन करता हूं कि पाक अधिकृत भारत का जितना हिस्सा है, व जो भी हम चीन के अंतर्गत मानते हैं, उसको इलेक्शन कमीशन ऑफ इंडिया को बताया जाए कि यह भौगोलिक क्षेत्र है और इसकी इतनी जनसंख्या है, इसके हिसाब से आप बताइए कि कितनी लोक सभा की सीटें होनी चाहिए और कितनी राज्य सभा की होनी चाहिए। उसकी गणना करके उतनी सीटें यहां पर खाली रखिए और जब देश का वह हिस्सा देश को वापस मिलेगा, तब वहां के प्रतिनिधि यहां पर आकर बैठेंगे। सालों तक, पीढ़ियों तक वे खाली सीटें यह बताती रहेंगी कि भारत का वह हिस्सा अभी बाकी है, उसको वापस भारत में मिलाना है। वह मृत नहीं होना चाहिए, वह डेज नहीं होना चाहिए। वह डेड नहीं होगा, आने वाली पीढ़ियां इसे डेज नहीं होने देंगी। आप निश्चित रहिए, क्योंकि आने वाला जो युवा वर्ग है, वह बहु कारगर है, बहुत प्रभावी है। मेरी चिंता यह है कि वहां के जनप्रतिनिधियों का इस सदन में प्रतिनिधित्व होना चाहिए, क्योंकि वह भारत का हिस्सा है।

महोदय, इसके बाद जो डिपार्टमेंट है, वह होम डिपार्टमेंट है। भारत एक अद्भुत देश है। यहां ऐसे-ऐसे उदाहरण अपने ही हो सकते हैं। आजादी के 65 साल के बाद भी भारत के नागरिक कुल कितने हैं, इसका कोई रजिस्टर नहीं है। धर्मशाला है, जिसकी इच्छा है आओ, जिसकी इच्छा है चले जाओ। कोई पूछने वाला नहीं है, कोई नेशनल रजिस्टर नहीं है। विधान सभा चुनाव में जाओ, तो मतदाता सूची एक अलग होती है और लोक सभा चुनाव में जाओ, तो बेचारा मतदाता पूरे शहर में ढूंढता रहता है मेरा नाम काट दिया, मेरा नाम काट दिया। एक अदना सा प्रशासनिक अधिकारी एक दबंग राजनेता के कहने पर सूची में से नाम काट देता है और देश का मतदाता भटकता रहता है। यह इसलिए होता है कि इस देश का कोई रजिस्टर नहीं है, इस देश के अंदर पैदा होने वाले और मरने वाले लोगों की कोई गणना नहीं है। होना यह चाहिए कि शाम को एमएचए (MHA) के किसी विंग के अंदर यह डाटा अपलोड होना चाहिए कि आज देश के अंदर इतने बच्चे पैदा हुए और आज देश में इतने मर गए, देश के टोटल नागरिकों की संख्या आज इतनी है। जब इतना लाइव गवर्नेन्स होता है, तब हम संभाल पाते हैं। मैं यह

[श्री अनिल माधव दवे]

बात केवल आंतरिक रक्षा के लिए नहीं कह रहा हूं, केवल इसलिए नहीं कह रहा हूं बल्कि स्टेटिस्टिक्स, प्लानिंग, फाइनेंशियल मैनेजमेंट, संसाधनों के वितरण के लिए कह रहे हैं हम कहते हैं कि संसाधन देश का, राज्य का अधिकार है, वह बाद की बात है, समायोजित और समायोजन होकर वितरण करने के लिए समझ में तो आए कि ये संसाधन टोटल कितने हैं ओर कितने लोगों में बांटने हैं। आंतरिक रक्षा जैसे सब विषयों में इन सबमें अगर मिस-मैनेजमेंट खड़ा होता है, तो उसका कारण यह है कि इस देश का कोई रजिस्टर नहीं है। यह जो डिपार्टमेंट ऑफ होम है, उसका एक पार्ट है। इसमें बहुत सारी चीजें हैं, लेकिन समय को ध्यान में रखते हुए मैं इस समय केवल उसके एक-एक बिंदु के ऊपर ही अपने विचार व्यक्त कर रहा हूं।

महोदय, इसके बाद मैं डिपार्टमेंट ऑफ ऑफिशियल लेंग्वेज पर आता हूं। मेरे ख्याल से कम्युनिस्ट पार्टी के मेरे सभी मित्र चले गए हैं, यहां कोई नहीं बैठा है।

SHRI P. RAJEEVE (Kerala): I am present. ...*(Interruptions)*...

श्री अनिल माधव दवे : अच्छा आप हैं, तो आप कन्वे कर दीजिएगा। त्रिपुरा में एक माणिक सरकार है। वहां के मुख्यमंत्री श्रीमान माणिक जी हैं। डिपार्टमेंट ऑफ ऑफिशियल लैंग्वेज के अंतर्गत मैं इस बात को रख रहा हूं। किसी भी पॉलिटिशियन के लिए यह आदमी एक मॉडल है। आज भी वे अपने कपड़े हाथ से धोते हैं, उनकी पत्नी आज भी रिक्शे से सब्जी लेने जाती है, जैसे देश के प्रधानमंत्री की माता जी रिक्शे में बैठकर वोट डालने जाती है। उनका ऑफिशियल लैंग्वेज से क्या संबंध है? उस पर मैं आना चाहता हूं। उन्होंने कहा कि मेरे प्रांत की भाषा कोक-बोरोक भाषा है, इसलिए जिसको यहां पर प्रशासन करना हो, जिसको वहां पर आम लोगों से संवाद करना हो, ऐसे सभी अधिकारियों को और ऐसे सभी कर्मचारियों को कोक-बोरोक भाषा सीखनी पड़ेगी। उसके लिए उन्होंने दबाव पैदा नहीं किया, उसके लिए उन्होंने प्रशिक्षण के कार्यक्रम बनाए, उसके लिए उन्होंने लोक जागरण किया, तहसीलदार से कहा कि कोक-बोरोक सीखो, पटवारी से कहा कि कोक-बोरोक सीखो, डिप्टी कलक्टर से कहा कि कोक-बोरोक सीखो और इस तरह से कोक-बोरोक भाषा को उस राज्य के अंदर प्रचलित किया तो अन्य राज्यों में वहां के किसानों को खसरा खतौनी, जमीन का काम वहां की ही तेलुगु, मलयालम, ओडिया, मराठी भाषा में क्यों नहीं दिया जा रहा है? क्यों हम उसे लोकल लैवल पर फोर्स नहीं कर रहे हैं। इसे केवल और केवल किसी एक लिंक लैंग्वेज में या अंग्रेजी में ही क्यों दिया जाना चाहिए? मित्रो, उसका कारण यह है कि जब देश आज़ाद हुआ, तब गोरे अंग्रेज तो चले गए, लेकिन काले आ गए। उन्होंने कहा कि एक शॉर्टकट निकालो। तब उन्होंने वर्ग संघर्ष की तरह एक भाषा संघर्ष निकाला। इस देश के अंदर आज से सौ साल पहले लोग चारधाम यात्रा पर जाते थे, हजार साल पहले चारधाम यात्रा पर जाते थे। रामेश्वरम से चला हुआ व्यक्ति जब बद्रीनाथ, केदारनाथ पहुंचता था तो उसे गढ़वाली भाषा नहीं आती थी। इसी प्रकार हिमाचल प्रदेश का चला हुआ व्यक्ति जब द्वारिकाधीश पहुंचता था तो उसे गुजराती नहीं आती थी, लेकिन बहुत आराम से चारधाम यात्रा कर लेता था। वह ऐसा कैसे कर लेता था? वह इसलिए यात्रा कर लेता था क्योंकि तब पॉलिटिशियन नहीं थे। तब उसकी दुनिया चल जाती थी, लोग उसको रास्ता भी बता देते थे, वह चला भी जाता था, ढूंढ भी लेता था, बीमार होता था तो दवा भी मिल जाती थी, कोई उसका सामान चोरी भी नहीं करता था, जैसी बेहूदा हरकतें आज महिलाओं के साथ होती है, वैसा कोई नहीं करता था। The society was civilized, क्योंकि हमने बांटा नहीं, जोड़ा, इसलिए डिपार्टमेंट ऑफ ऑफिशियल लैंग्वेज के संबंध में कभी न कभी हमें यह समझना ही पड़ेगा कि भाषा अकेली नहीं आती है, वह अपने साथ संस्कार और शैली दोनों लाती है। वह अकेली नहीं आएगी,

अपने साथ सारी चीजें लेकर आती हैं। सर, मैं जब बार-बार कहता हूं तो लोगों को अच्छा नहीं लगता। भारतवासियों, गोरे रंग और गोरों की भाषा देखकर प्रभावित होना कम से कम 65 साल बाद तो बंद कर दीजिए। Let us not impress with the colour of the skin and the language. अगर प्रभावित होना है तो विचार से प्रभावित होइए, आदमी की ऊंचाई से प्रभावित होइए। कभी-कभी मैं सोचता हूं कि कांग्रेस का वह मंच कैसा होगा — गोविन्द वल्लभ पंत, सरोजिनी नायडू, सरदार पटेल, लाला हरदयाल — एक से एक towering personality मंच पर बैठती थी।

श्री हुसैन दलवई (महाराष्ट्र): आप नेहरू जी का नाम क्यों नहीं ले रहे? ...(**व्यवधान**)... जान-बूझकर भूल रहे हैं।

श्री अनिल माधव दवे: मैं आपकी बात कर रहा हूं। आप सुनिए तो सही। मौलाना आजाद— कितनी towering personality के लोग हुआ करते थे। उनके कारण ही संसद के गलियारों में घूमते हुए ऊपर दीवारों पर वाक्य लिखे हैं, वे इसीलिए लिखे हुए हैं क्योंकि वे बहुत बड़े लोग थे। इन बहुत बड़े लोगों से ही ऐसा होता है। जब भी छोटे मन के लोग आएंगे तो समस्या खड़ी हो जाएगी। लैंग्वेज के मामले में भारतीय भाषाओं के साथ-साथ, भारतीय भाषाओं का प्रचलन और स्थानीय प्रशासन के अंदर उसका प्रयोग, यह आज की भी मांग है, कल की भी मांग थी और भविष्य की भी मांग रहेगी। यह मांग खड़ी करनी पड़ेगी, यह खड़ी होनी ही चाहिए। मुझे लगता है, एमएचए के द्वारा अपने डिपार्टमेंट ऑफ ऑफिशियल लैंग्वेज में इस बात पर विचार करना चाहिए। इसको बहुत गहराई से लागू करने की आवश्यकता है। डिपार्टमेंट ऑफ स्टेट-राज्य हमने बनाए, हमारी प्रशासनिक सुविधा के लिए बनाए। नैसर्गिक राज्य अलग है, जैसे मध्य प्रदेश है। मध्य प्रदेश के अंदर क्षेत्रीय हिस्से कितने हैं — एक मालवा है, एक चम्बल है, एक महाकौशल है, एक बुंलेदखंड है, एक विंध्य है — पूरे देश में ऐसा है। जब किसी स्टेट के अंदर डेवलपमेंट हो तो सारे क्षेत्र का होना चाहिए। वैसे ही केंद्र को भी हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि जब विकास हो तो सारे राज्यों का होना चाहिए। नॉर्थ ईस्ट का विकास वैसा क्यों नहीं होता है, जैसा किसी दूसरे राज्य का हो रहा है? ओडिशा का विकास वैसा क्यों नहीं होता? मैं आपको बताना चाहता हूं कि जब न्याय की कुर्सी पर बैठा हुआ व्यक्ति, परिवार का मुखिया, संगठन का प्रमुख, सरकार का नेता निर्णय में partiality करता है तो प्रज्ञा अपराध होने लगता हे। प्रज्ञा अपराध का परिणाम यह होता है कि लोग दस रुपए का नोट सौ रुप्ए का बनाकर चलाने लगते हैं, सौ रुपए के नोट को बोलते हैं कि यह तो दस रुपए का है — यह प्रज्ञा अपराध है। जब निर्णय लेने वाला व्यक्ति प्रज्ञा अपराध करता है तो राज्य और राज्य में वैमनस्य पैदा होता है, तब राज्य और केंद्र में वैमनस्थ पैदा होता है। अगर राजा बड़े दिल का आदमी होता है तो कहता है कि नहीं, कोई फर्क नहीं पड़ता, सब ठीक करेंगे और सबको देखकर चलेंगे। मित्रो, हमने इस कॉस्टीट्यूशन के अंदर राज्य की व्यवस्था को लिया है इसलिए डिपार्टमेंट ऑफ स्टेट्स के अंदर ज्यादा बुद्धि की जरूरत नहीं है, शैक्सपिअर जैसी अंग्रेजी बोलने की जरूरत नहीं है। दिल से बड़ा होकर के, पूरे भारत को एक समझकर चलने की जरूरत है लेकिन यह जितना दिल्ली को समझने की जरूरत है, उतना भोपाल को भी समझने की जरूरत है। जब मैं भोपाल कह रहा हूं तो इसका मतलब 29 राज्यों के मुख्यालय से है। मैं भोपाल इसलिए कह रहा हूं कि कोई हल्ला नहीं मचाएगा क्योंकि सब मेरे पीछे हैं भोपाल में। मुझे कोई चिंता नहीं है कि कुछ अनावश्यक हल्ला हो जाएगा। मैं फिर कहना चाहता हूं कि हमें इस संबंध में बड़ा मन रखकर चलने की जरूरत है। अगर 65 सालों में कहीं कमी हुई है, कोई चूक हो गई है, तो यह निर्णय लेने वालों के द्वारा सही निर्णय नहीं लिया जाना, यही समस्या का मूल कारण है। एक विभाग इसके अंदर और है, हमने उसे पुलिस मैनेजमेंट कह दिया, लेकिन यहां पर मैं उसे भारतीय प्रशासनिक कार्यपालिका कहूंगा। कार्यपालिका,

[श्री अनिल माधव दवे]

न्यायपालिका और विधायिका हमने तीन भाग कहे हैं। ये जो कार्यपालिका के संबंध में बहुत ही विचित्र बात है। हमें आजाद होने के बाद मंत्र चाहिए था, तो बाबा साहेब अम्बेडकर ने चार-पांच साल मेहनत करके हमको मंत्र दिया। उन्होंने कहा कि देखो यह भारत का संविधान है। यह तुम लोगों के काम करने का मंत्र है, इसको जपते रहना, इससे काम हो जाएगा और वे हमें मंत्र देकर चले गए। हमें तंत्र भी स्वदेशी चाहिए था, हमें तंत्र भी अपना चाहिए था, तो हमने क्या किया? हमने यूरोप के देशों की बुक उठाई, उदाहरण के लिए — वहां से हमने एक संविधान उठाया, उसका preface or back-cover फाड़ा, उसका कवर निकाला और उस पर हमने अपना कवर लगा दिया। पहले ICS था, हमने उसको IAS कर दिया, पहले इम्पीरियल पुलिस सर्विस था, हमने उसको IPS कर दिया, उसके अंदर का ढांचा वैसा ही रखा। रेवेन्यु में हमने क्या किया, वही किया। लैंड रिकार्ड में हमने क्या किया, वही किया जो ब्रिटिश कर गए, उसी को हम करते चले गए। वस्तुतः स्वतंत्र भारत को अपना स्व तंत्र चाहिए, हमें आजादी तो मिल गई है, लेकिन हमारे तंत्र का स्वदेशीकरण शेष है। मित्रो, मुझे लगता है कि इस संबंध में सुधार करने की जरूरत है और इस संबंध में सुधार करने की कोशिश भी हुई है। IAS में सुधार करने के संबंध में 35 कमीशंस बने हैं। सबसे पहला 1947 में सेंट्रल पे कमीशन, नेशनल कमीशन, 1948 में Economic Committee Recognition of Machinery of Government वहां से लगाकर Civil Services Reform 2004, The Second Administration Reforms Commission 2005. लेकिन उसका क्या परिणाम आया, वह हमारे सामने है। वैसे ही पुलिस विभाग में भी Dharamveera Commission से लेकर सोली सोराबजी, मॉडल पुलिस एक्ट, सबके अंदर है। हमने सोचा कि पुलिस को एक कम्प्यूटर दे दो, एक अच्छी गन दे दो, उससे पुलिस ठीक होती है। भाई साहब, ये संसाधन है और संसाधनों से विभाग ठीक नहीं होते। विभागों को ठीक करने के लिए समग्रता से सोचना पड़ता है। मुझे ऐसा लगता है कि इसके बारे में सोचना चाहिए वरना आज भी हम 1860 की आईपीसी की धाराएं चलाते हैं और ये विचित्र धाराएं हैं। धारा 304(ए) के अंतर्गत अगर एक्सीडेंट हो जाए तो केवल दो साल की सजा है, चाहे सामने वाला मर जाए, क्योंकि 1860 में कार अंग्रेजों के पास ही होती थी। लाठी मार दो, तो कोई धारा नहीं है, अगर गाली बक दो तो आईपीसी की धारा 294 लग जाती है। यह इसलिए है कि आम गरीब आदमी खड़ा है, गोरा अंग्रेज जा रहा है, तो आप उसे गाली बकोगे, वह धारा 294 लग देता है और यह संज्ञेय अपराध हो गया। आम आदमी तो किसी गोरा को लट्ठ मारने वाला नहीं था, गोरा ही लट्ठ मारता था, तो वह असंज्ञेय अपराध हो गया। कानून की इन विसंगतियों के ऊपर हमें ध्यान देना पड़ेगा।

मैं अंतिम बात कह कर अपनी बात समाप्त करता हूं। यह जो जनादेश हमें मिला है यह गवर्नेंस के लिए नहीं मिला है, यह गुड गवर्नेंस के लिए मिला है। जनता ने हमारे शब्दों पर भरोसा किया है और जनता हमसे हिसाब मांगेगी। कबीरदास जी कह गए हैं कि सत्ता के साथ एक बड़ा विचित्र दोष है— "प्रभुता पाही, काही मद नाही।" प्रभुता को पाकर किसको मद नहीं होता। फिर आगे तुलसी दास जी कहते हैं कि जो राम का भक्त होता है, उसे मद नहीं होता। जैसे ही वह होता है, वैसे ही आदमी जमीन से एक फीट ऊपर चलता है और आसमान में हाथ लगाकर चलता है, उसको लगता है कि आसमान गिर जाएगा, अगर मैंने हाथ हटा दिया तो। भाई, यह नहीं गिर रहा है, यह ऐसे ही रहने वाला है। हम गुड गवर्नेंस के लिए प्रतिबद्ध हैं और हमको उस दिशा में बढ़ना ही पड़ेगा। यह हमारी इच्छा नहीं है, यह हमारी अनिवार्यता है और यह परिवतन का जनादेश है। लोग हमसे परिवतन चाहते हैं। परिवर्तन का मतलब है, 10+2, 10+1, 11+3 शिक्षा में इस प्रकार का परिवतन नहीं चाहिए, हमें from top to

bottom पुनःनिर्माण चाहिए। उस परिवतन के लिए जितनी कोशिश हो, वह करने की जरूरत है। यह अद्भुत देश है। मीरा को तो याद रखा जाता है, लेकिन मेवाड़ के महाराजा को याद नहीं रखा जाता। आज हम जो यहां पर IAS परीक्षा को लेकर विवाद कर रहे हैं, उनको छोड़िए, जो यह परीक्षा पास कर लेंगे, ऐसे पचास छात्र और छात्राओं को बुलाना और उनसे पूछना कि मीरा पर दो लाइन बोलिए, तो वे बोल देंगे। उनसे पूछो कि मीरा के समय में मेवाड़ का राजा कौन था, तो पचास बच्चों में से अगर पांच बच्चे भी बता देंगे तो मैं पूरे सदन को पार्टी देने को तैयार हूं। ये गालिब को याद रखते हैं, रसखान को याद रखते हैं, लेकिन उस समय तख्तेताऊस पर कौन महाराजा बैठा था, उसको याद नहीं रखते। यह अजीब देश है। इसकी यह विशेषता है, इसलिए हम सबको हमेशा यह ध्यान रखना पड़ेगा कि हमे समय-सीमा में, टाइम बाउंड, रिजल्ट ओरिएंटेड, कार्य के परिणाम देने हैं। उन परिणामों के लिए पूरा सदन और देश हम सबकी ओर देखता है। इसलिए जब कभी भी समय जाया होता है, तो मुझे बहुत दुख होता है। मुझे लगता है कि आखिर हम कहां जा रहे हैं? एक शेर गालिब ने लिखा है, मैं उसको बोलकर अपनी बात खत्म करता हूं और वह शायद बीते हुए कल की कहानी भी है —

"गालिब जिंदगी भर यही भूल करता रहा।
धूल चेहरे पर थी और आईना साफ करता रहा।"

मैंने इसको रीमेक किया है। आजकल फिल्में भी रीमेक होती हैं, जैसे शोले रीमेक हो गई, ये या वो रीमेक हो गई मैंने गालिब के इस शेर को कुछ यूं रीमेक किया है,

"बापू पैंसठ सालों से हम यही गलती करते रहे।
धूल लुटियन की दिल्ली में थी, हम गांव की चौपाल साफ करते रहे।।"

बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री प्रमोद तिवारी (उत्तर प्रदेश): डिप्टी चेयरमैन साहब, आज मुझे माधव दवे साहब बहुत दुखी लग रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री अनिल माधव दवे: आप चिंता मत करिए, पूर्व जन्मों के संस्कार इतने अच्छे है कि मैं इस जन्म में कभी दुखी नहीं होऊंगा।

श्री प्रमोद तिवारी: मान्यवर, मैं यह नहीं समझ सकता कि कौन ऐसा हिंदुस्तानी है, जिसे अपने देश पर नाज न हो, रहे हैं, क्योंकि इन्होंने एक बार भी आपको संबोधित नहीं किया। उपसभापति जी, आपको बिल्कुल ही संबोधित नहीं किया। ये मित्रों कहते रहे, तो वह 40 मिनट वाली क्लास पूरे 40 मिनट तक चली। आपकी एक विचारधारा थी। आप दुखी है, इसलिए मैं तो माननीय गृह मंत्री जी से कहूंगा कि कुछ सिफारिश कर दें, सच्चे हैं तो आपको सही हंसी आ जाए। ...(**व्यवधान**)...

डा. सत्यनारायण जटिया (मध्य प्रदेश): सह नहीं सकते ...(**व्यवधान**)...

श्री प्रमोद तिवारी: मैं आपका नाम लेना भूल गया था, आप तो अटल जी की सरकार में मंत्री थें। मैं आपका भी दुख समझ सकता हूं। मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि आपने इस देश को कभी विचित्र कहा, कभी अजीब कहा। मैं कांग्रेस की तरफ से यह कहना चाहता हूं कि हमें अपने देश पर नाज है और यह महान देश है, हमें इस पर फ्रख है। मैं आपसे सिर्फ यह कहकर अपनी बात खत्म करूंगा कि आप तो गुजरात का जिक्र करते-करते... उपसभापति जी, इन्होंने कहा कि पहले हिमाचल का आदमी जब

[श्री प्रमोद तिवारी]

द्वारका जाता था, गुजरात जाता था, तो वह आराम से जाता था, अब वह नहीं जा पाता। गुजरात से नाराज क्यों हो, मेरे भाई? ये यह कह रहे हैं कि पहले वहां पॉलिटिशियंस नहीं थे, अब पॉलिटिशियंस है। इसमें कांग्रेस को क्या दोष है? आप 15 साल से तो काबिल है, अभी आपने गुजरात को खराब कर दिया, तो मैं क्या करूं?

श्री अनिल माधव दवे: तिवारी जी, समस्या यह है कि चील चाहे कितना ही ऊपर उड़े, नजर तो मांस पर ही रहती है। ...(**व्यवधान**)...

श्री प्रमोद तिवारी: मैं सिर्फ आगे बढ़ रहा था। आज से एक साल पहले एक निर्भया कांड हुआ था। उस समय दिल्ली में मोमबत्ती मिलनी बंद हो गई थी। आपने सारी मोमबत्तियां जला डाली थी। आप कहते थे शर्म करो। हमें शर्म आई थी, दुख हुआ था। उपसभापति जी, मैं आज ही का अखबार पढ़ रहा था, उसमें तीन खबरें हैं। पहली खबर है — डिफेंस कालोनी के एक स्कूल की पांच साल की मासूम बच्ची का चलती टैक्सी में शारीरिक शोषण होता रहा। आप हमसे तो शर्म करने के लिए कह रहे थे, क्या आपको शर्म आ रही है? आपके राज्य, देश की राजधानी दिल्ली में पांच साल की मासूम बच्ची के साथ यह हो रहा है। आप दूसरी खबर पढ़ लीजिएगा — वह बच्ची तो पांच साल की थी, आपकी रेंज तो बहुत बड़ी है, आपकी दिल्ली में 82 साल की महिला के साथ बलात्कार करने के बाद हत्या हो रही है। मैं आपसे कहना चाहता हूं यदि वहीं रुक जाते तो ठीक था। आप आज ही का अखबार पढ़ लीजिएगा, रोहिणी में एक महिला को जबर्दस्ती लेकर जाते वक्त, उसके साथ चार लोग रात भर बलात्कार करते हैं। यह आपका 56 इंच का सीना है। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि मैं यह सब सिर्फ आज के अखबार से पढ़ रहा हूं।

डिप्टी चेयरमैन साहब, कल जब मैं यहां से लौटकर गया और जैसे ही टेलीविजन खोला तो देखा कि चार-पांच लोग एक बच्चे को चारों तरफ से घेरकर छुरे से वार कर रहे हैं। उसको चौदह बार चाकू मारा गया, वे गोलियां लहराते हुए चले गए। मैंने सोचा कि यह शायद देश के किसी ऐसे कोने में हो रहा होगा, जहां पर भाजपा का शासन नहीं होगा, लेकिन जब नीचे पढ़ने लगा तो पता चला कि यह दिल्ली के मदनगीर इलाके में हो रहा है। आपने दो महीने में बहुत अच्छी कानून व्यवस्था कर दी है कि दिन-दहाड़े, साढ़े तीन बजे दिल्ली के मदनगीर इलाके में सचिन नामक नौजवान को चौछह बार छुरा मारा गया। मैं पूछना चाहता हूं कि कहां थी आपकी पुलिस, कहां था आपका इकबाल? शायद इधर कुछ कम पड़ गया है, आप नपवा लीजिएगा, कहीं आपका सीमा 56 इंच से 54 इंच तो नहीं हो गया है? आप इसको देख लीजिएगा जब न्यूज रिपोर्टर उसे कवर करने गया तो उसकी बहिन ने सिर्फ एक बात कही कि अच्छे दिन आ गए हैं। अच्छे दिन इसलिए आ गए हैं कि दिन में, साढ़े तीन बजे, दिल्ली की सड़क पर एक नौजवान मदद के लिए चिल्लाता रहता है, लेकिन मदद देने वाला कोई नहीं होता। यह आपके आने से हुआ है। मैं आपसे सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं कि आपने कुछ कहा है। जब आपने सरहद की परिभाषा दी है, मैं तो इतना ही कहूंगा कि पिछले दो महीनों मे जितनी बार सरहद की पवित्रता तोड़ी गई है, वह सालों में भी नहीं तोड़ी जाती थी। यह एक मजबूत सरकार का इकबाल है जो आपके रूप मे बैठा हुआ है।

आप इज़राइल जाते रहते हैं। आप कहते हैं कि ए.के. 47 वैपन नहीं है, हमें अब समझ में आया कि फिलिस्तीन में यह सब क्यों हो रहा है। आप हर साल इज़राइल जाते हैं। आपने कहा कि वहां पर ए.के. 47 वैपन नहीं माना जाता है। आप इसको जान लेते हैं कि वहां किस घर में क्या हो रहा है। हमें आज समझ में आया कि आप फोन टैपिंग क्यों करते हैं। चूंकि आपको जानना होता है कि दूसरे के घर में क्या

हो रहा है, मंत्री जी के घर में, सांसद के घर में क्या हो रहा है, इसलिए आप इसको कराते हैं। अभी तक फोन टैपिंग मेरी समझ में नहीं आई थी, लेकिन आज समझ मे आ गई है। वह बात भी ठीक हूं।

आप शरणार्थी के बारे में कह रहे थे। आपने कहा अजीब देश है, विचित्र देश है कि हिंदुस्तान के लोग शरणार्थी हैं। जब आपने कश्मीर की तरफ नजर डाली है तो गुजरात पर भी नजर डाल दीजिए, क्योंकि वहां पर हजारों लोग 2002 से अभी भी शरणार्थी हैं। आप पहले उनको तो उनके घर में पहुंचा दो। मैं यह नहीं कहता, मैं कुछ नहीं कहना चाहता हूं, लेकिन मैं यह बात जानता हूं अभी 12 साल बीते हैं, भगवान राम को आने में 14 साल लगे थे अतः अभी दो साल और लगेंगे।

उपसभापति जी, मैं आपके माध्यम से इस देश को जगाना चाहता हूं कि अब इनका एजेंडा बदल गया है। इनका कल तक का एजेंडा, "अच्छा दिन आने वाले हैं" था, पर उत्तराखंड के तीन चुनाव परिणाम आने के बाद आप कांप गए हैं, हिल गये हैं, आपको लग रहा है कि अच्छे दिन से काम चलने वाला नहीं है, इसलिए आप सांप्रदायिकता के एजेंडे पर फिर से लौट आए हैं। हर जगह, जहां भी सांप्रदायिकता बढ़ रही है, जब हम उसकी गहराई में जाते हैं, तो हमें उसमें आपका कहीं न कहीं, कोई न कोई रूप या कोई न कोई संगठन दिखता है। मैं अपने इसी भाषण में, इसी सदन में चुनौती देते हुए कहता हूं कि मैं यह साबित करूंगा कि आप सांप्रदायिकता बढ़ा रहे हैं, इसको ला रहे हैं। मैं आपको इस देश के पहले प्रधानमंत्री की ओर से कही गई बात को याद दिला दूं कि सांप्रदायिकता यूं ही खतरनाक होती है। यह बुरी चीज है, यह तोड़ती है कि देश को, समाज को पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने कहा था कि जो मेजोरिटी की सांप्रदायिकता होती है, वह बहुत खतरनाक होती है। आप वही कर रहे हैं। भगवान इस देश को बचाए आपसे।

मान्यवर, मैं आपसे सिर्फ इतना जरूर कहना चाहूंगा, लेकिन आप कहेंगे कि आप किस आधार पर कह रहे हो। जब आप विपक्ष में बैठो, तो आपकी भाषा कुछ और हो सकती है, पर जब इस महान भारत की सरकार आपकी हो, तो आपका रोल बदल जाना चाहिए। आप थोड़ा तो बदल लो अपने आपको। आप हमें तो बदलने की नसीहत देते हो, लेकिन खुद तो बदल जाओ। मैं अब आपको दो-तीन उदाहरण देता हूं, जो आपने किया है। मुजफ्फरनगर में जो हुआ है, मेरठ में जो हुआ है, वह इत्तेफाक हो सकता है। एक छोटे से प्याऊ का झगड़ा था। वहां मोबाइल पर जो वीडियो आया है, एसएमएस और एमएमएस के जरिए, यह वही वीडियो है, जो एक जमाने में 2002 में गुजरात में चला था। यह इत्तेफाक हो सकता है। मैं आप पर इलजाम तो लगा ही नहीं सकता, लेकिन इत्तेफाक हो सकता है। यह वही था और उसके बाद दंगे भड़के हैं। चलिए, वह भी हो गया। मैं कह रहा था कि मैं आपके सामने साक्ष्य दूंगा अब मैं साक्ष्य दे रहा हूं। माननीय मंत्री जी, अगर आप कह सके, तो कहिएगा। इस समय जो गृह मंत्री है, मैं उन्हें उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री के रूप में जानता हूं। वे मजबूत आदमी हैं, गृह मंत्री भी मजबूत रहे हैं, लेकिन लगता है कि आजकल ऊपर से मामला कुछ ठीक नहीं चल रहा है, इसलिए अभी ये अपने ऑरिजिनल फॉर्म में नहीं आए हैं, जिस दिन आ जाएंगे, ठीक हो जाएगा। मैं आपसे सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं कि आपके सेनानायक, उत्तर प्रदेश के सबसे बड़े पदाधिकारी, मैं आपको यह अखबार भिजवा दूंगा, उनका बयान है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी मुरादाबाद को केंद्र बिंदु बनाएगी। एक लाउडस्पीकर लगे या न लगे, आपकी पार्टी का सेनापति कह रहा है कि उसे केंद्र बिंदु बनाएंगे। फिर केंद्र बिंदु बना कर आपने क्या किया? मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ और मुजफ्फरनगर से वे महान लोग, जिनके खिलाफ सांप्रदायिकता की चार्जशीट दाखिल है, वे सारे बड़े-बड़े महारथी मुरादाबाद कूच कर गए। महापंचायत। पंचायत होनी थी, तो जिस मोहल्ले का लाउडस्पीकर लगा था, अगर वहां के

[श्री प्रमोद तिवारी]

20-25 घर के लोग बैठ जाते, तो तय हो जाता। मुजफ्फरनगर, मेरठ, बिजनौर के लोग वहां क्यों गए? अगर गए, तो उन्होंने क्या किया? वे तो शांतिदूत थे, शांति स्थापित करने गए थे। सिर्फ एक परिणाम बता दूं आपको। एक डीएम, जो जिले का सबसे बड़ा अधिकारी होता है, आपके इन्हीं महारथियों की वजह से अब जिंदगी भर दूसरी आंख से कभी नहीं देख पाएगा, क्योंकि इनकी वजह से उसकी आंख फोड़ दी गई। डीएम की आंख। शंकर नेत्रालय की रिपोर्ट है कि अब वह कभी नहीं देख पाएगा। आपके ये महाशांतिदूत वहां यह काम करने गए थे। फिर वही सेनानायक, फिर मेरे पास अखबार है, मैं आपके पास भिजवा दूंगा, मैं कैसे कह सकता हूं, आप हो भी, तो मैं नहीं कहूंगा, उसने कहा कि हम नागिन की तरह, नागिन तो जहरीली होती है, उसने कहा कि हम नागिन की तरह अपनी आंखों में तुम्हारी तस्वीर बसा लेते हैं और हम बदला लेकर छोड़ते हैं। अब आप नागिन की तरह रुख दिखाएंगे या भारत की सरकार बना लेने के बाद नागिन के काटे का इलाज करेंगे, यह फैसला आप कर लीजिए। लेकिन आप सांप्रदायिकता फैलाते हैं, मैंने दो उदाहरण दिए हैं। चूंकि वे सम्मानित सदन के सदस्य नहीं हैं, अगर आप चुनौती दें, तो मैं नाम भी बता सकता हूं, तारीख भी बता सकता हूं, अखबार भी बता सकता हूं और बयान भी बता सकता हूं। अखबारों के बयान तो कभी-कभी गलत कह दिए जाते हैं। यह राजनीतिज्ञों की आदत होती है कि जब बयान सूट न करे, तो यह कह दें कि मैंने ऐसा नहीं कहा था। लेकिन इत्तेफाक से अब चैनल्स चल गए हैं, उनके रिकार्ड मिल जाते हैं, इसलिए उनको झूठलाना जरा मुश्किल होता है। इसलिए मुझे चुनौती देने से पहले थोड़ा सा सोच लेना। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि हमारी विधान सभा, जिसके सम्मानित सदस्य आदरणीय गृह मंत्री जी भी रहे हैं, आदरणीय कलराज मिश्र जी भी रहे हैं, मैं भी रहा हूं, बहुत सी सरकारों में बहुत से प्रदर्शन, आंदोलन हुए हैं, हमने आंदोलनकारियों के हाथों में झंडे, डंडे तक तो देखे हैं, लेकिन देसीबम कभी नहीं देखे थे। इस बार पहली बार ऐसा हुआ है। फिर वे लोग निकले कहां से थे? उसी के सामने एक राजनैतिक बल का भवन है, जिसकी अध्यक्षता आपने भी की है और इन्होंने भी की है। वहां भारतीय जनता पार्टी के कार्यालय से अगर देसी बम निकलेंगे और यहां आप सरकार बनाएंगे तो क्या होगा? ...(**व्यवधान**)... उस पर आपका जवाब यह था कि वहां अराजकता फैलाने वालों से भाजपा का कोई वास्ता नहीं है, वे गलती से यहां घुस आए थे। जब आप अपना ऑफिस ही नहीं संभाल पा रहे हैं, तो हमारे देश को क्या संभालेंगे? सिर्फ इतना ही पूछना चाहता हूं कि अगर डीएम की आँख फूटी और विद्यान सभा के सामने देसी बम चले, तो आप माफी मांगेगे या नहीं? यह निर्णय मैं आप पर छोड़ देता हूं।

मुरादाबाद में भी गुजरात मॉडल लागू करने की कोशिश हुई, वहां एक ट्रेन की बोगी जलाने की कोशिश हुई, उसे गोधरा बनाने की कोशिश हुई। अगर वहां पर कुछ लोग जल जाते तो क्या होता? ...(**व्यवधान**)...

श्री चुनीभाई कांजीभाई गोहेल (गुजरात): आप गोधरा की बात मत करिए, गोधरा तो आपने ही बनाया था। ...(**व्यवधान**)... यह आप क्या बात कर रहे हैं? ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Dont disturb please ...*(Interruptions)*... Don't disturb please. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAMOD TIWARI: I am not yielding at all. ...*(Interruptions)*... I am not yielding. ...*(Interruptions)*...

मान्यवर, जब तक हिन्दुस्तान के नक्शे पर गोधरा रहेगा, उसका नाम नहीं बदल जाएगा, तब तक मुझे गोधरा का नाम लेने का अधिकार रहेगा। मैं बाकी बात तो नहीं जानता, वैसे आपकी तो दाढ़ी भी नहीं है, लेकिन मेरे यहां कहा जाता है, "चोर की दाढ़ी में तिनका"। मैंने गोधरा का नाम लिया और

आप चिल्लाने लगे। क्या रिश्ता है आपका गोधरा से? मैंने यह कब कहा कि वह आपने जलाया था? आप सफाई देने के लिए क्यों खड़े हो गए कि हमने नहीं जलाया था? ...(**व्यवधान**)...

श्री चुनीभाई कांजीभाई गोहेल: उसे आपने ही तो जलाया था। ...(**व्यवधान**)... उसकी शुरूआत तो आपने ही की थी। ...(**व्यवधान**)...

श्री प्रमोद तिवारी: लेकिन उसे खत्म तो आपने किया था।

श्री चुनीभाई कांजीभाई गोहेल: उसे आपने ही जलाया था।

श्री प्रमोद तिवारी: माननीय उपसभापति जी, मैं आपका संरक्षण चाहता हूं। need your protection. ...*(Interruption)*... I dont want to yield. ...*(Interruption)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Sit dwon. ...*(Interruption)*... Sit down. ...*(Interruption)*...

श्री अनिल माधव दवे: यह एमएचए का ...(**व्यवधान**)...

श्री प्रमोद तिवारी: मेरे ख्याल से, दवे साहब, कानून व्यवस्था एमएचए के अन्दर ही आती है। ...(**व्यवधान**)... दंगा फैलाना एमएचए के अन्दर ही आता है। मैं ठीक कह रहा हूं न! ...(**व्यवधान**)... 35 साल से मैं यही कर रहा हूं, आप छोड़िए! ...(**व्यवधान**)... बैठ जाइए।

मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं कि सरकार बना लेने के बाद देश की जिम्मेदारी भी बदल जाती है, आपको याद आए या न आए, लेकिन मैं आपको वही याद दिला रहा हूं। मेरे ख्याल से आपको याद आ जाना चाहिए। मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं कि महाविनाश की तरफ मत बढ़िए। अगर आप उस तरफ बढ़ेंगे तो यह देश माफ नहीं करेगा।

माननीय उपसभापति जी, मैं आपके माध्यम से इनसे एक सवाल पूछना चाहता हूं, जो कुछ हुआ, क्या इसकी जिम्मेदारी, संविधान के अनुसार बनाई हुई केन्द्र सरकार लेगी? अगर यहां के लोग वहां गए, डीएम की आँख फूटी, कानून व्यवस्था बिगड़ी, उसके बाद लखनऊ में दंगे-फसाद हुए, तो क्या आप इसके लिए माफी मांगेंगे? आप इसकी जिम्मेदारी लेंगे या नहीं लेंगे? अगर लेंगे तो सारा देश आपसे यह जानना चाहता है कि आप अपनी यह आदत कब छोड़ेंगे? आपकी हेराफेरी वाली आदत जा नहीं रही है। ...(**व्यवधान**)... मैं आपसे दो-एक बातें और कहना चाहता हूं।

उपसभापति जी, एक इत्तिफाक हो सकता है, मैं चाहता हूं कि उसे वे स्पष्ट कर दें। उत्तर प्रदेश में 12 स्थानों पर उप-चुनाव होने हैं? सारे साम्प्रदायिक तनाव उन्हीं जगहों पर क्यों फैलाए जा रहे हैं, जहां उप-चुनाव होने हैं? कांठ, मुरादाबाद, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, इनसे कुछ तो रिश्ता लगता है आपका। मेरा सिर्फ यही कहना है कि आपका एजेंडा बदल गया है। उत्तराखंड हादसे के बाद लोग डरे और सहमे हुए थे, ये समझते थे कि जनता इनके साथ है, लेकिन अब इनको लगने लगा है कि दो ही महीने में हमारा असली चेहरा जनता के सामने आ गया है और अब अच्छे दिन के नाम पर वोट मिलने वाले नहीं हैं। अब इनके एजेंडे पर पहले नम्बर पर साम्प्रदायिकता आ गई है और इसीलिए जान बूझकर प्रोवोक किया जा रहा है। आजमगढ़ को आतंकगढ़ कहा जा रहा है। आजमगढ़ राहुल सांकृतयायन की नगरी है, कैफी आज़मी की नगरी है। देश की आजादी में आजमगढ़ एक महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। आदरणीय गृह मंत्री जी के क्षेत्र चंदोली से भी वह लगा हुआ है। वहां का महान इतिहास है। उसे जिन लोगों ने आतंकगढ़ कहा है, उनको आप अच्छी तरह जानते हैं।

मैं आपसे इतना जरूर कहना चाहूंगा, हालांकि इस समय वह कहना कुछ ठीक नहीं होगा, लेकिन फिर भी मैं कह देता हूं, आप अरुणाचल की सीमा की बात तो कर रहे थे, लेकिन आजकल क्या

[श्री प्रमोद तिवारी]

हो गया है कि पूर्वोत्तर के जो लोग हैं, वे सड़कों पर सुरक्षित नहीं हैं? आपके आने के बाद यह कैसा सांस्कृतिक परिवतन हुआ है कि आज हमारे गृह राज्य मंत्री जी के क्षेत्र से, गृह राज्य मंत्री जी के आसपास के प्रदेशों के लोगों पर दिल्ली में आपकी सरकार आने के बाद हमले हो रहे हैं? यह आप धर्म के नाम पर, भाषा के नाम पर, क्षेत्र के नाम पर जो आग लगा रहे हैं, इस आग में अगर हिन्दुस्तान जलेगा तो आप भी नहीं बचेंगे। मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि आप यह मत कीजिए।

मान्यवर, एक मौका होता तो मैं कह देता, लेकिन छः-सात वाकये हुए हैं, इसलिए मैं जरूर कहना चाहूँगा। उपसभापति जी, मैं आपसे यह जरूर कहना चाहूँगा कि पाँच साल की बच्ची का जिक्र किया गया। दवे जी ज्यादा अच्छी तरह जानते होंगे। इनके आने के बाद अब तो स्कूल में छोटे बच्चे भी सुरक्षित नहीं रहे। छात्रों के योन शोषण भी दिल्ली में हो रहे हैं। यह कौन-सी संस्कृति है, महाराज दवे जी, जरा अपने प्रवचन में स्पष्ट कर दीजिएगा कि आपके आने के बाद यह क्या शुरू हो गया है?

मैं आपसे इतना जरूर कहना चाहूँगा, सुझाव के रूप में, कि आपकी जो पैरामिलिट्री फोर्स है, उस पर हमले हो रहे हैं। आज ही हमारा एक नौजवान सीमा की रक्षा करते हुए नदी में बह गया और पाकिस्तान की तरफ चला गया है। आप उनको आधुनिक हथियारों से इक्विप्ड क्यों नहीं कर रहे हैं? अगर उन पर सुरंगों से विस्फोट होते हैं, तो उन्हें लाने का इंतजाम आप क्यों नहीं कर रहे हैं, जिससे वे समय पर पहुँच जाएँ और उन्हें मेडिकल एड मिल सके?

मैं कहना चाहता हूँ कि आपने जो इंटेलिजेंस की बात की है, तो अगर इंटेलिजेंस फेल्योर नहीं होता तो छत्तीसगढ़ में हमारे सम्पूर्ण कांग्रेस के नेतृत्व का सफाया नहीं होता। कहीं न कहीं जो आपकी जिम्मेदारी थी, आप सुरक्षा देने से चूक गए और हमारे तमाम वे महान नेता मारे गए। अगर छत्तीसगढ़ में कायदे से इनपुट मिला होता, तो कभी उनकी जान न जाती। छत्तीसगढ़ में किसकी सरकार है, यह आप जानिए।

सर, कहने से कुछ नहीं होता, कुछ करके दिखाना भी पड़ता है। किसी पार्टी के नेता होने पर वह उस पार्टी का प्रतिनिधित्व करता है, परन्तु देश के किसी महान पद पर आ आने के बाद जनता को विश्वास दिलाना होता है कि हम सबके हैं। अकेले अमेरिका के विदेश मंत्री को विश्वास दिलाने से काम नहीं चलेगा, देश की हर अवाम को विश्वास दिलाने से काम चलेगा। आप कहते हैं कि 65 साल में यह देश चौपट हो गया। आप भूल गए कि अटल बिहारी वाजपेयी जी जैसा महान नेता भी इसका प्रधान मंत्री रहा। कम से कम उनको तो आप बख्श दिया कीजिए। उनके तो छः-सात साल इसमें से निकाल दिया कीजिए। आप उनसे क्यों नाराज हैं? परन्तु उनकी एक अच्छी परम्परा तो ले लेते। मैं यह इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि आपको बताना पड़ेगा, जो प्रधान मंत्री पद पर होगा उसे यह बताना पड़ेगा कि हम सबके हैं, सबके साथ हैं। एक रोजा-इफ्तार कर लेते तो देश का खजाना खाली न हो जाता, लेकिन एक संदेश चला जाता, जो एक असुरक्षा की भावना है, वह दूर होती। हम तुम्हारे लिए भी हैं, यह संदेश देने में आपने कोताही की। मैं तो इस पर कहना चाहता हूँ कि शायद आपके मन में यह रहा हो और आप यह संदेश देता चाहते हों कि अब हम आ गये हैं, तुम अपना रास्ता ढूँढ लो। यह देश रास्ता ढूँढ़ लेगा। यह देश अपनी गलतियों से सबक सीख लेगा। एक गलती हो गयी कि आप वहाँ बैठे हैं, अब देश दोबारा गलती करने वाला नहीं है। लेकिन रोजा-इफ्तार न करके आपने संदेश भेज दिया।

सर, सिक्योरिटी की बात पर मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि सिक्योरिटी की जहाँ जरूरत हो, उसे दी जाए। यह सिर्फ राजनैतिक कारणों से न हटे। मैं यह सिर्फ आपसे इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि मुझे पूरा भरोसा है। लेकिन एक चीज़ तो देखनी पड़ेगी, जब इंटेलिजेंस की बात आप करते हैं कि क्या बात है कि जब से आप आए हैं, आपका क्या रिश्ता है, ये ट्रेन के एक्सीडेंट्स कुछ ज्यादा क्यों हो रहे है,

6.00 P.M.

ये नक्सलाइट्स क्यों ऐसा कर रहे हैं? क्या नक्सली गतिविधियाँ कुछ बढ़ी हैं? पटरी उड़ा दी गई थी, लेकिन राजधानी एक्सप्रेस बच गई। वह तो किस्मत थी कि वह बच गई। इसका मिनिस्ट्री ऑफ होम अफेयर्स से सीधा सम्बन्ध है, इसलिए मैं कह रहा हूँ कि आपके आने के बाद नक्सलवाद बढ़ा है, नक्सलवादी गतिविधियाँ बढ़ी हैं, आपका नियंत्रण खत्म हुआ है और आप पूरे तरीके से कानून-व्यवस्था बनाये रखने में या डर और भय दिखाने में कामयाब नहीं रहे हैं। जो यह भय आप सभी अल्पसंख्यकों को दिखा रहे हैं, काश अपराध करने वालों को दिखा दें, तो शायद इस देश की कानून व्यवस्था सुधर जाए, मैं आपसे यह भी जरूर कहना चाहता हूँ।

सर, मैंने पहले कहा और हम इस दृढ़ मत के हैं कि कुछ पदों पर बैठे हुए लोग हमारा प्रतिनिधित्व करते हैं। मैं खास तौर से दुखी हूँ, इसलिए कह रहा हूँ, वरना नहीं कहता। मेरी आत्मा में कहीं न कहीं पीड़ा है और देश का जो भी स्वाभिमानी आदमी होगा, उसे पीड़ा होगी। मैं आदरणीय प्रधान मंत्री जी को बधाई देना चाहता हूँ कि उनकी नेपाल यात्रा सफल रही। वे नेपाल गए, नेपाल हमारा स्वाभाविक मित्र है, आपने उसके साथ रिश्ते बनाए, बहुत अच्छा किया। आपने पूजा-पाठ की, वह भी बहुत अच्छा किया। आपने 2500 किलो चंदन की लकड़ी भी चढ़ा दी, वह भी आपने बहुत अच्छा किया। सब ठीक किया। ...(**व्यवधान**)... कैसे ले गये थे या क्या किया था, यह आप जानें। 2500 किलो चंदन की लकड़ी ले जा सकते थे या नहीं ले जा सकते थे, मैं उसमें नहीं पड़ता ...(**व्यवधान**)... सब जुर्म माफ है, छप्पन इंच का सीना है। पर, मैं एक वाक्य कहना चाहता हूँ, देश के शहीदों की श्रृद्धा में नमन करते हुए, प्रणाम करते हुए मैं कहना चाहता हूँ कि इन्हें तो विचित्र देश लगता है, पर मुझे अपने देश के शहीदों पर गर्व है। हम मानते है कि देश के हर दौर में भारतवासियों ने जिस त्याग और बलिदान का परिचय दिया है, दुनिया के इतिहास में उसका सानी नहीं मिलता है, लेकिन प्रधान मंत्री जी वहां पर क्या कह गए? उन्होंने कहा कि किसी ने मुझसे कहा है कि वह मौत से नहीं डरता। या तो असत्य बोल रहा है या गोरखा है। गोरखा बहादुर होते हैं, मैं उनकी बहादुरी को सलाम करता हूँ, लेकिन जनरल वी.के. सिंह साहब बैठे हुए हैं, वे बताएं कि जिन लोगों ने अपने प्राणों का बलिदान किया है, क्या उनमें हवलदार अब्दुल हमीद मुसलमान नहीं था, गोरखा था? मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि क्या कश्मीर की हिफाज़त करने वाला ब्रिगेडियर उस्मान गोरखा था, क्या मेजर सोमनाथ गोरखा था, क्या परमवीर चक्र विजेता मनोज पांडे गोरखा था? टी. किरण ईसाई था, जिसने पहली बार सेबर जेट को मार गिराया था, क्या वह गोरखा था? मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि आपने गोरखाओं का सम्मान तो किया और हम भी उसमें अपनी आवाज़ को शामिल करते हैं, पर उससे कहीं न कहीं आपने भारत के वीर सपूतों का अपमान किया है और मैं इसके लिए आपसे यह आग्रह करूंगा कि भविष्य में आप इसका थोड़ा ख्याल रखें। ...(**व्यवधान**)... बहुत सही बयानी है, बिल्कुल सच कह रहा हूँ और दावे के साथ कह रहा हूँ कि यह क्वोट करते हुए जनरल का नाम लिया गया है, जो बाद में फिर मार्शल बने। उनका उद्धरण देकर कहा गया है। ...(**व्यवधान**)... मैं कह रहा हूँ कि वहां का एक-एक सेकण्ड का रिकॉर्ड है, वह पार्लियामेंट की स्पीच है। अगर आपने नहीं देखा है, तो आप जाकर देख लीजिए। शायद आजकल आप नहीं देख रहे हैं।

आप बलात्कार की बात करते हैं, उत्पीड़न की बात करते हैं और आप भोपाल का बहुत जिक्र कर रहे थे, खैर आपका पूरा ख्याल दिग्विजय सिंह जी रखेंगे, वे बताएंगे, पर मैं तो सिर्फ एक बात बता देना चाहता हूँ, चूंकि दवे जी, आप कहते हैं कि पीछे सब भोपाल के बैठे हुए हैं, इसलिए भोपाल की बात बोल देता हूँ कि 6,655 महिलाओं का उत्पीड़न अगर कहीं हुआ है ... देश के विकास में आप कहीं तरक्की कीजिए या नहीं कीजिए, लेकिन मध्य प्रदेश इसमें टॉप पर है। यह कहने की जरूरत नहीं है कि वहां पर 15 साल से आपका

[श्री प्रमोद तिवारी]

शासन है। ...(**व्यवधान**)... मेरे बहुत से दोस्त आंकड़े देंगे, मैं बहुत आंकड़े लेकर आया था, लेकिन मैं नहीं देना चाहता हूँ। मैं आंकड़ों की बात नहीं करना चाहता हूँ, सिर्फ एक बात कह कर अपनी बात समाप्त करना चाहता हूँ।

माननीय उपसभापति जी, जब देश यह महसूस कर ले कि वह सुरक्षित है, जब यह भावना आम जन में जाग जाए कि वह सुरक्षित है, उसी दिन आपकी सरकार का अच्छा दिन आएगा। यह सही बात है कि आपने कहा था कि अच्छे दिन आएंगे, अच्छे दिन आए, इसमें कोई दो रायें नहीं हैं, लेकिन ये कुछ लोगों के आए ...(**व्यवधान**)... धन्यवाद, आपके मुंह में घी शक्कर, मैं आपको बधाई देता हूँ और आदरणीय राजनाथ सिंह जी से कहूंगा कि वे अगली बार मंत्री बनवाने में आपकी कुछ मदद कर दें। आपको लग गया न कि हमारे अच्छे दिन आएंगे, जरूर आएंगे, आप चाहे जितनी कोशिश कीजिए, जितनी सांप्रदायिकता फैलाइए, जितनी जातीयता बढ़ाइए, कांग्रेस के तिरंगे को कोई रोक नहीं पाएगा, एक बार फिर हम देश में सरकार बनाएंगे, यह सच्चाई है, यह हम कर रहे हैं। महोदय, शायद आप मुझे रोकने वाले हैं, इसलिए मैं समाप्त कर रहा हूँ। मैं आपका बहुत आभारी हूँ कि पहली बार आपने मुझे बीच में रोका नहीं। बहुत बहुत धन्यवाद।

RECOMMENDATIONS OF THE BUSINESS ADVISORY COMMITTEE

MR. DEPUTY CHAIRMAN : I have to inform Members that the Business Advisory Committee in its meeting held on the 7th of August, 2014, has allotted time for Government Legislative and other Business as follows:–

	Business	Time Allotted
1.	Consideration and passing of the Labour Laws (Exemption from Furnishing Returns and Maintaining Registers by certain Establishments) Amendment Bill, 2011	Three Hours
2.	Consideration and passing of the Securities Laws (Amendment) Bill, 2014, as passed by Lok Sabha.	Two Hours
3.	Consideration and passing of the following Bills, after they are passed by Lok Sabha:–	
	(a) The Railways (Amendment) Bill, 2014.	Two Hours
	(b) The Factories (Amendment) Bill, 2014.	Four Hours
4.	Discussion on the working of the following Ministries:–	
	(a) Home Affairs	Eight Hours *(Insterad of one day allotted earlier)*
	(b) Women and Child Development	Five Hours *(Insterad of one day allotted earlier)*